सब सजनों को

जय सीता राम जी

जैसा कि आप सब को पूर्वतः दिनाँक 01 फरवरी 2011 से दिनाँक 02 मार्च 2011 तक रात्रि 8.40 से 9.10 बजे के मध्य श्रद्धा चैनल पर प्रसारित होने वाले कार्यक्रमों की विशेष श्रृंखला के विषय में पत्र द्वारा सूचित किया ही गया था। उसी सन्दर्भ में इन धारावाहिकों को अवश्य देखने, समझने व विचार में लाने की महत्ता के विषय में आपको बताने हेतु निम्नलिखित जानकारी दी जा रही है ताकि न केवल आप खुद इस जानकारी से लाभान्वित हो सकें अपितु सम्पर्क में आने वाले घर-परिवार के सदस्यों, सम्बन्धियों व चिर-परिचितों इत्यादि को भी इस विषय में सम्पूर्णतया बता इस का लाभ पहुँचा पाने में सक्षम हो जाएं।

आओ सजन बनें सतयुग की ओर बढ़ें.....................

'सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ के अनुसार'

'समभाव दी होसवे फ़तह, 'समभाव दी होसवे फ़तह', 'समभाव दी होसवे फ़तह'

इस धारावाहिक द्वारा हम विश्व के हर मानव को 'सतयुग' की आद् संस्कृति के विषय में बताकर पुनः उसी अनुकूल सुसंस्कृत बनाने का प्रयत्न करने जा रहे हैं। अन्य शब्दों में हम प्रत्येक मानव को अब तक अपनाए दुराचारी भाव-स्वभाव को परिवर्तित कर सदाचारी बनने हेतु जाग्रत करना चाहते हैं। उसके ह्रदय में सजनता यानि मानवता का संचार करने के लिए उसे सतयुगी नैतिकता के आधार 'समभाव' से परिचित कराना चाहते हैं। इस प्रकार हम उसे ख़्याल की स्वच्छता, जिह्वा की स्वतन्त्रता और दृष्टि की कंचनता अर्थात् अंतःकरण की नितांत शुद्धता सुनिश्चित करने की अनिवार्यता और महत्ता युक्तिसंगत बताना चाहते हैं।

इस सन्दर्भ में आधुनिक वैज्ञानिक युग में सुख-समृद्धि के विभिन्न साधन उपलब्ध होने के उपरांत भी प्रत्येक मानव मानसिक शांति प्राप्त करने में असमर्थ है। ऐसे में **'समभाव का अनुशीलन'** ही प्रत्येक के ह्रदय को शाश्वत शांति प्रदान कर उसका जीवन सर्वरूपेण परम आनंदमय बना सकता है। सरल शब्दों में अपने दिल और दिमाग पर छाए हुए द्वि-द्वेष जैसे अनेकानेक विकारी भावों के कुप्रभाव को मिटाने के लिए मनुष्य के पास आज समभाव के अतिरिक्त अन्य कोई विकल्प नहीं है। एकमात्र 'समभाव' ही सम्पूर्ण मानव जाति में एकता और एकरसता का संचार करने में सक्षम है। जिस प्रकार सतयुगी मानव ने यह तथ्य सत्य सिद्ध कर दिखलाया उसी प्रकार हमारा और आपका पुरुषार्थ भी निश्चित ही इस यत्न में सफल हो सकता है।

इस हेतु इस सत्य को हमें गहराई से समझना होगा और समभाव को मानव-धर्म के रूप में अपनाना होगा। सम्पूर्ण मानव जाति के लिए तदनुकूल राजनीति और धर्मनीति निर्धारित कर एकछत्र शासन प्रणाली को स्वीकार करना होगा। तभी व्यक्तिगत स्तर पर प्रत्येक मानव मनोविकारों से स्वतंत्र हो आपसी व मज़हबी झगड़ों से मुक्त हो सकेगा। याद रहे समभाव ह्रदय में स्थित होने का अनुभव करने पर ही हर मानव अपनी वृत्ति-स्मृति, भाव-स्वभाव और बुद्धि को पुनः सदा निर्मल अवस्था में रख सकेगा। इस प्रकार अपने मन-वचन-कर्म को निष्कामता के नियमानुकूल साधे रख परोपकारी बनना उसके लिए सहज हो जाएगा। परिणामस्वरूप स्वार्थसिद्धि हेतु किए जाने वाले असंख्य गुनाहों से छुटकारा पा मनुष्य पुनः परस्पर सजन-भाव के वर्त-वर्ताव द्वारा एकता के सूत्र में बँध अफुर हो इस मृतलोक को जीत सकेगा।

निश्चित रूप से समभाव ही एकमात्र अहंकाररहित और विवादहीन भाव है। अतः प्रत्येक मानव के लिए इसे खुद धारण कर वर्त-वर्ताव में लाना अनिवार्य है। तभी वह अपनी वर्तमान व भावी पीढ़ियों का आदर्श कीर्तिमान बन कर तदनुकूल उनका पालन-पोषण करने तथा सबके प्रति अपने कर्त्तव्यों का कुशलतापूर्वक संपादन करने में समर्थ हो सकेगा। इस हेतु हम हर बुद्धिजीवी से प्रार्थना करते हैं कि वह विभिन्न कर्मकांडों से उबरकर हमारे इस सुझाव को माने और अपने-अपने श्रद्धेय धर्म-ग्रन्थ में वर्णित समभाव का युक्तिसंगत ज्ञान खुद प्राप्त कर उसे विचार व व्यवहार में ले आए और सबकी जानकारी हेतु आप इस क्रमानुसार संकलित ज्ञान को हमें प्रेषित भी अवश्य करें। आप के इस सहयोग द्वारा हम समस्त धर्म-ग्रन्थों में वर्णित समभाव से सम्बन्धित ज्ञान का लाभ इसी वर्ष अपने परिसर में खुलने वाले समभाव-समदृष्टि के स्कूल के माध्यम से सभी सजनों तक पहुँचाना चाहते हैं।

इस सन्दर्भ में हम आप सब से यह भी अनुरोध करते हैं कि कुदरत की सर्वोत्कृष्ट कलाकृति मानव को अपनी उत्कृष्टता के अनुरूप श्रेष्ठ, विद्वान, गुणवान, बलवान, धनवान, बुद्धिमान व ज्ञानवान बनाने के लिए युवावस्था की भक्ति यानि समभाव-समदृष्टि की युक्ति का पाठ पढ़ाएं। आप स्वीकारेंगे कि एकमात्र इस युक्ति के अनुशीलन द्वारा ही मनुष्य नौजवान युवावस्था को प्राप्त कर उच्च बुद्धि, उच्च ख़्याल हो सकता है और उसकी भक्ति प्रबल व शक्ति ताकतवर हो सकती है। इस प्रकार भौतिकवादी संसार के दृश्य देखते हुए भी उसका मन व इन्द्रियाँ चलायमान नहीं होंगी और वह सदैव संतोष और धैर्य को धारण कर सत्यनिष्ठ और धर्मपरायण बना रह अपनी उत्कृष्टता को सिद्ध कर सकेगा।

'सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ के अनुसार'

'समभाव दी होसवे फ़तह, 'समभाव दी होसवे फ़तह', 'समभाव दी होसवे फ़तह'